इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

BSOC-131

समाजशास्त्र का परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. जे . के. पुंडीर
समाजशास्त्र विभाग
सी. सी. एस विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रो. शरत भौमिक
टीआईएसएस, मुंबई

प्रो. एस. रॉय
एनबीयू,दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल

प्रो. रोमा चटर्जी
समाजशास्त्र विभाग
दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स
न्यू दिल्ली

प्रो. सव्यसाची
समाजशास्त्र विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया
न्यू दिल्ली

डॉ. अभिजीत कुंडु
श्री वेंकटेश्वर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. देबल के. सिंहरॉय
समाजशास्त्र संकाय
इग्नू , नई दिल्ली

प्रो. नीता माथुर
समाजशास्त्र संकाय, इग्नू, न्यू दिल्ली

डॉ अर्चना सिंह
समाजशास्त्र संकाय, इग्नू, न्यू दिल्ली

डॉ किरणमयी भुशी
समाजशास्त्र संकाय, इग्नू, दिल्ली

डॉ रबीन्द्र कुमार
समाजशास्त्र संकाय, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर. वाशुम
समाजशास्त्र संकाय, न्यू दिल्ली

पाठ्यक्रम तैयार करने वाली टीम

खंड और इकाई		इकाई लेखक	अनुवादक
खंड 1	**समाजशास्त्र की प्रकृति और क्षेत्र**		
इकाई 1	समाजशास्त्र और समाजिक मानव विज्ञान का उद्भव	डॉ. आर. वाशुम, इग्नू और अनुशा बत्रा, शोध छात्रा, इग्नू	आरती अनुपम
खंड 2	**समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध**		
इकाई 2	समाजशास्त्र का मानव विज्ञान के साथ संबंध	डॉ. आर.वाशुम, इग्नू	डॉ. राजेश कुमार माँझी
इकाई 3	समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से संबंध	डॉ. राजश्री चंचल सहा. प्रो.एयूडी, दिल्ली	एम.पी. कमल
इकाई 4	समाजशास्त्र और इतिहास से संबंध	डॉ. शाहीद, मानू, हैदराबाद	आरती अनुपम
इकाई 5	समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध	अहमेदुल कबीर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, दक्षिण बिहार, गया	एम.पी. कमल
इकाई 6	समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान से संबंध	डॉ. शाहिद, मानू, हैदराबाद	डॉ राजेश कुमार मॉझी
खंड 3	**बुनियादी अवधारणाएँ**		
इकाई 7	संस्कृति और समाज	रोमा रानू दाश शोधार्थी,जे.एन.यू	एम.पी. कमल
इकाई 8	सामाजिक समूह और समुदाय	रुक्मिणी दत्ता शोधार्थी, इग्नू	राजेन्द्र पांडे
इकाई 9	संगठन और संस्थाएँ	स्मृति सिंह, स्वतंत्र विदुषी	राजेन्द्र पांडे
इकाई 10	प्रस्थिति और भूमिका	श्रीति गांगुली शोधार्थी, जे. एन. यू	शर्मिष्ठा घोषल
इकाई 11	सामाजीकरण	बियंका डाव शोधार्थी ,जे.एन.यू	एम.पी.कमल
इकाई 12	संरचना और प्रकार्य	प्रो. (से.नि) विनय कुमार श्रीवास्तव,दि.वि	राजेन्द्र पांडे
इकाई 13	सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन	डॉ. आर वाशुम, इग्नू और शुस्वी के, परामर्शदाता,न्यूपा	राजेन्द्र पांडे

पाठ्यक्रम संयोजक : डॉ. आर. वाशुम, समाजशास्त्र संकाय, इग्नू

प्रधान संपादक : प्रोफेसर (से.नि.) शुभद्रा चन्ना, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय और डॉ. आर. वाशुम, समाजशास्त्र संकाय, इग्नू, नई दिल्ली

संपादक (विषयवस्तु, प्रारूप और भाषा) : डॉ. आर. वाशुम, समाजशास्त्र संकाय, इग्नू

अकादमिक परामर्शदाता : डॉ. विनोद कुमार यादव

कवर डिजाइन : डॉ. जुचामो यॉथान और ए.डी.ए. ग्राफिक्स

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एमपीडीडी, इग्नू, नई दिल्ली

श्री यशपाल
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एमपीडीडी, इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त, 2019

ISBN : 978-93-89499-10-0

© इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कृति का कोई भी अंश, मिमियोग्राफ या किसी भी अन्य रूप में, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, एमपीडीडी, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : एस० जी० प्रिण्ट पैक्स प्रा० लि०, एफ-478, सेक्टर-63, नोएडा 201301, उ०प्र०

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

			पृष्ठ संख्या
खंड	**1**	**समाजशास्त्र : अनुशासन और परिप्रेक्ष्य**	**7**
इकाई	1	समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव	9
खंड	**2**	**समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध**	**23**
इकाई	2	समाजशास्त्र का मानव विज्ञान के साथ संबंध	25
इकाई	3	समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से संबंध	38
इकाई	4	समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध	52
इकाई	5	समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध	64
इकाई	6	समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान से संबंध	77
खंड	**3**	**बुनियादी अवधारणाएँ**	**89**
इकाई	7	संस्कृति और समाज	91
इकाई	8	सामाजिक समूह और समुदाय	109
इकाई	9	संगठन और संस्थाएँ	124
इकाई	10	प्रस्थिति और भूमिका	138
इकाई	11	सामाजीकरण	152
इकाई	12	संरचना और प्रकार्य	165
इकाई	13	सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन	178
सहायक पुस्तकें			**192**
शब्दकोष			**195**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 1

समाजशास्त्र की प्रकृति और क्षेत्र

पाठ्यक्रम परिचय

पाठ्यक्रम का जोर विविध प्रशिक्षण और क्षमताओं से छात्रों को अनुशासन का परिचय देना है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को समाजशास्त्रीय तरीके से सोचने से परिचित कराना है। यह समाज विज्ञान के अन्य संबंधित विषयों के साथ समाजशास्त्र के संबंध, और समाजशास्त्र की मूल अवधारणाओं और सरोकार से परिचित कराने का आधार प्रदान करता है।

इस पाठ्यक्रम में तीन खंड और तेरह इकाइयाँ (अध्याय) हैं। सबसे पहला "समाजशास्त्रः अनुशासन और परिप्रेक्ष्य" शीर्षक खंड समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान के रूप में अन्तः संबंधित अनुशासन के उद्भव को भी अवस्थित करता है लेकिन उन्हें विशिष्ट अनुशासन के रूप मे भी स्थापित करता है।

खंड 2 जिसका शीर्षक है "समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञान"समाजशास्त्र के अन्य संबंधित विषयों के साथ समाजशास्त्र के संबंधों पर चर्चा करता है,विशेष रूप से, मानव विज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र औरराजनीति विज्ञान के साथ। इसकी पाँच इकाइयाँ हैं। "बुनियादी अवधारणाओं" शीर्षक के तहत खंड 3 समाजशास्त्र में प्रयुक्त कुछ मूल अवधारणाओं की व्याख्या करता है। उनमें शामिल है "संस्कृति और समाज "," सामाजिक समूह और समुदाय "," संघ और संस्थाएँ ","प्रस्थिति और भूमिका", "समाजीकरण", "संरचना और कार्य", और "सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन "।

पाठ को समझने और सीखने की मदद के लिए, इकाइयों की व्यवस्था क्रमिक खंड के तहत विषयवार की गई है। प्रत्येक खंड के अंतर्गत इकाइयाँ भी हैं जो शिक्षार्थी की सहायता के लिए संरचित की गई हैं । हर इकाई "संरचना" से शुरू होती है और उसके बाद "उद्देश्य", "परिचय", मुख्य सामग्री,सारांश और "संदर्भ" आता है । इसे आकर्षक बनाने के लिए, अभ्यास को जहाँ भी आवश्यक हो "अपनी प्रगति की जाँच करें" के रूप मे डाला गया है। यह अभ्यास परीक्षा के दृष्टिकोण से प्रतिदर्श प्रश्नों के रूप में भी उपयोगी हो सकता है। इकाइयों की बेहतर समझ के लिए अन्य महत्वपूर्ण घटक "सहायक पुस्तकें" और "शब्दावली" हैं जो पाठ्यक्रम के अंत में संलग्न हैं ।

इकाई 1 समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान का उद्‌भव*

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 समाजशास्त्र का उद्‌भव

1.2.1 ज्ञानोदय काल

1.2.2 वैज्ञानिक क्रांति

1.3 सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों ने 19वीं शताब्दी के यूरोपीय समाज को प्रभावित किया

1.3.1 फ्रांस की क्रांति

1.3.2 औद्योगिक क्रांति

1.4 समाजशास्त्र के सिद्धांत का उदय

1.5 सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव

1.5.1 विकास का पहला चरण

1.5.2 विकास का दूसरा चरण

1.6 आधुनिक सामाजिक मानवशास्त्र का उद्‌भव

1.7 सामाजिक मानव विज्ञान के प्रणेता

1.8 सारांश

1.9 संदर्भ

1.0 उद्देश्य

यह इकाई विद्धार्थी को निम्न समझाने मे सहायता करेगी :

- समाजशास्त्र का उद्‌भव;
- समाजशास्त्र के उद्‌भव के कारक;
- सामाजिक सिद्धांतों का उदय;
- सामाजिक मानवविज्ञान का उद्‌भव;
- सामाजिक मानवविज्ञान के विकास के चरण;
- सामाजिक मानवविज्ञान के प्रणेता; तथा
- आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव।

*डॉ. आर. वाशुम, समाजशास्त्र संकाय, एस.ओ.एस.एस., इग्नू और अनुशा बत्रा, शोध छात्रा, इग्नू

1.1 प्रस्तावना

समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान कई पहलुओं से आपस में गहरा संबंध रखते है। वास्तव में सामाजिक मानव विज्ञान समाज शास्त्र का सबसे निकटवर्ती विषय है। कभी कभी अन्वेषण और पद्धति के कुछ क्षेत्रों में सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र से पृथक कर पाना कठिन होता है। यहाँ तक के सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत दोनों ही विषय अपेक्षाकृत नवीन है समानताएं होने के बावजूद भी समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान के उद्‌भव के विविध ऐतिहासिक आधार है। हालांकि ऐसा कहा जाता है कि सामाजिक मानव विज्ञान समाजशास्त्र से कुछ ही समय पहले प्रकाश में आया, प्रारंभ में इन दो अनुशासनों के विषयगत मामलों के बीच अंतर करना बहुत ही कठिन था। सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव (या जहाँ तक इस विषय का संबंध है। भौतिक मानव विज्ञान सहित 'एकीकृत मानव विज्ञान') अधिक जटिल है, जबकि समाजशास्त्र के उद्‌भव को खोजना अपेक्षाकृत सरल है। दोनों ही अनुशासन कई शताब्दियों पुराने हैं; हालांकि, दोनों ही 19वीं शताब्दी में शैक्षिक विषय के रूप में उभरे। जैसे जैसे हम इस इकाई में आगे बढ़ेंगे तो हम दोनों विषयों के उद्‌भव के विभिन्न ऐतिहासिक विकास को जान सकेंगे।

1.2 समाज शास्त्र का उद्‌भव

सामाजिक विज्ञान के शैक्षणिक विषय के एक रूप में समाजशास्त्र के उद्‌भव को समझने के लिए सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक कारकों को समझना अनिवार्य है। पश्चिमी यूरोप 18वीं और 19वीं सदी में तीव्र और गंभीर परिवर्तनों का साक्षी रहा है। इसने समाज के प्रति समझ और इसमें व्यक्ति के स्थान के प्रति भी प्रतिमान के परिवर्तन की ओर अग्रसर किया। वैज्ञानिक खोज और वैज्ञानिक पद्धति के संदर्भ में पर्याप्त प्रगति हो रही थी। हालांकि प्राकृतिक विज्ञान अभी भी अपनी आरंभिक स्थिति में है तथापि भौतिक दुनिया के अध्ययन के लिए 'व्यवस्थित' पद्धति का विकास करना प्रारंभ कर चुका है। कोम्ट और दुर्खाइम जैसे शुरुआती समाजशास्त्रियों के मस्तिष्क पर हावी रहने वाला प्रश्न यह था कि मानव सामाजिक दुनिया के अध्ययन के लिए एक समान वैज्ञानिक और व्यवस्थित दृष्टिकोण लागू किया जा सकता है?

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय प्रगतियों ने पारंपरिक ग्रामीण कृषक समाज को आधुनिक शहरी औद्योगिक समाज में परिवर्तित करने की और अग्रसर किया। जैसा की हम इस इकाई में आगे पढेंगे कि नए आविष्कारों के कारण उत्पादन का स्तर छोटे घरेलु उद्योगों से बड़े पैमाने के कारखाने जैसे उद्धमों में परिवर्तित हो गया है। इस प्रकार के विकास के साथ ही व्यापक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तन भी हुए जिसका गहरा असर प्रमुख राजनैतिक क्रांतियों सहित पश्चिमी यूरोपीय समाजों पर पड़ा। हालांकि ये व्यापक परिवर्तन ना केवल औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के केंद्र रहे अपितु इन्होंने एक विरोधाभासी स्थिति भी उत्पन्न की। विरोधाभासी इसलिए क्योंकि इसे आशावादी और निराशावादी दोनों ही रूपों में चिन्हित किया गया। भूतपूर्व पारंपरिक समाजों से जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पहलुओं के परिवर्तन के कारण इसे आशावादी कहा गया जिसे तर्कसंगत और प्रबुद्ध दर्शन के रूप में देखा गया, विशेष रूप से अंधकार युग में चर्च के शासन के संदर्भ में। फिर भी यह 'आधुनिक' समाज जिसने मानवीय सर्जनशीलता और तर्कसंगतता को बढ़ावा दिया वह अव्यवस्था और अराजकता की सतत स्थिति में था क्योंकि पहले के स्थिर क्रमों को नए द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा था। समाजशास्त्र, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हो रहे इन बौधिक और भौतिक/सामाजिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि

में एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में उभरा। हम कुछ एक कारकों की चर्चा करेंगे जिसने समाजशास्त्र को एक शैक्षणिक विषय के रूप में उभरने में योगदान दिया।

1.2.1 ज्ञानोदय काल

ज्ञानोदय या 'तर्क का काल' बौधिक विकास का काल था, जो 18वीं शताब्दी में यूरोप में दार्शनिक विचारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया। सामाजिक जीवन से संबंधित कई मौजूदा विचारों और मान्यताओं को परास्त किया और इस अवधि के दौरान विचार की नई धाराओं को प्रतिस्थपित किया। फ्रांसीसी दार्शनिक चार्ल्स मोंटेस्क्यु और जीन जैक्वेस रूसो नई ज्ञानोदय से जुड़े इस दौर के प्रसिद्ध विचारक थे। यह अवधि सामंती यूरोप के तत्कालीन दर्शनों से अलग एक मौलिक परिवर्तन को चिंहित करती है। सामाजिक और नैतिक मान्यताओं को अब पवित्र रूप में धर्म वैधानिक और पुण्य नहीं माना जाता था। व्यक्ति विवेकशील और आलोचनात्मक बनता जा रहा था। शासक के युगों, पुराने पवित्र अधिकार सिद्धांतों को छोड़ दें तो, अब कुछ भी पवित्र नहीं माना जाता था- चर्च से लेकर राज्य और राज्य से लेकर शासक के प्राधिकरण तक, अब कुछ भी त्रुटिरहित नहीं माना जाता था। इस प्रकार के विचारों की जड़ें, इस धारणा के रूप में थी कि प्रकृति और समाज दोनों का अध्ययन अनुभव द्वारा भी किया जा सकता है, कि मनुष्य अनिवार्य रूप से तर्कसंगत है और इस तरह का समाज जो तर्कसंगत सिद्धांतों पर बना है। मनुष्य को उसकी अनंत क्षमताओं का एहसास दिलाएगा, जिसे औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रांति के रूप में देखा गया था जो उस अवधि के दौरान दृढ़ता से स्थापित हुई और जो फ्रांस और अमरीकी क्रांति की साक्षी रही।

1.2.2 वैज्ञानिक क्रांति

चोदहवीं से सोलहवीं शताब्दी के नवजागरण काल में यूरोप ने 'वैज्ञानिक क्रांति' को उत्पन्न किया जिसे व्यक्ति और प्रकृति के प्रति एक नए दृष्टिकोण के रूप में चिंहित किया गया। प्राकृतिक वस्तुएं गहन अवलोकन और प्रयोग का विषय बन गईं। इस क्रांति का प्रभाव ना केवल भौतिक जीवन को परिवर्तित करने अपितु प्रकृति और समाज के बारे मे लोगों द्वारा रखे जाने वाले विचारों को भी परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण था। कोपर्निकन क्रांति और पिछले भूकेंद्रित सिद्धांत से सुर्यकेंद्रित सिद्धांत के प्रति आन्दोलन इस वैज्ञानिक क्रांति के कुछ महत्वपूर्ण विकास थे; प्रयोगों के काल के पथप्रदर्शक वैज्ञानिकों जैसे गेलीलियो गैलीलि, जोहांस केप्लर और आइज़ैक न्यूटन जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात किया और वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित समाज के विज्ञान का निर्माण करने की समाजशास्त्रियों की बढ़ती इच्छा को बढ़ावा दिया। इसके अलावा, डार्विन के उद्व विकासवादी सिद्धांत ने जन्माधारित बाईबल के सिद्धांत के प्रति एक कट्टरपंथी आलोचना को जन्म दिया। हर्बर्ट स्पेंसर ने डार्विन से पहले विकास की धारणा का सूत्रपात किया था और कॉम्ट जैसे फ्रांसीसी दार्शनिकों ने समाज के विकास का वर्णन किया, लेकिन डार्विन ने मानव के जैविक विकास के वैध प्रमाण प्रदान किये। इन सिद्धांतों ने समाज के विकासवादी सिद्धांत की उन्नति का नेतृत्व किया, जिसमें ना केवल जैविक अपितु समाजों को भी निरंतर निम्न अवस्था से उच्च अवस्था में पनपते और विकसित होते देखा गया। मानव शरीर का विच्छेदन जो कि पुनर्जागरण के बाद किया जाना प्रारंभ हुआ, मानव शरीर की कार्यप्रणाली को बेहतर समझने में लोगों की मदद की। इन सभी बातों ने विकल्पों के पुराने विचारों और सुझावों को चुनौती देने में मुख्य भूमिका निभाई। हालांकि, इन विकल्पों को केवल तभी स्वीकार किया गया जब इन्हें साबित और बार बार सत्यापित किया जा सके, अन्यथा नए समाधान खोजे गए। अतः वैज्ञानिक विधि एक सटीक और उद्देश्यपूर्ण विधि के रूप में मानी जाने लगी।

1.3 सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन जिसने 19वीं शताब्दी के यूरोपीय समाज को प्रभावित किया

1.3.1 फ्रांस की क्रांति

1798 की फ्रांसीसी क्रांति 'स्वतंत्रता, बंधुता और समानता' के लिए मानव संघर्ष के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ साबित हुई। इसने सामंतवादी युग को समाप्त कर दिया और समाज के एक नए क्रम मे पदार्पण किया। इस क्रांति का एक महत्वपूर्ण योगदान न केवल फ्रांसीसी समाज बल्कि पूरे यूरोपीय समाजों में इसके द्वारा लाए गए दूरगामी परिवर्तन थे। यहाँ तक की अन्य महाद्वीपों में सुदूर देशों जैसे भारत इस क्रांति के दौरान उत्पन्न विचारों से प्रभावित था। स्वतंत्रता, बंधुता और समानता जैसे विचार, जो अब भारत के संविधान की प्रस्तावना का एक हिस्सा हैं, उनकी उत्पत्ति फ्रांसीसी क्रांति के कारण ही हुई।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान फ्रांस भी, अन्य यूरोपीय देशों की तरह, कारण और तर्कवाद के युग में प्रवेश कर चुका था। प्रमुख दार्शनिकों जिनके विचारों ने फ्रांसीसी लोगों को प्रभावित किया, वे तर्कवादी थे, जो इस बात पर विश्वास करते थे कि 'सभी वास्तविक वस्तुएं कारण द्वारा साबित हो सकती हैं'। इनमें से कुछ विचारक, मोंटेस्क्यू (1689-1755), लॉक (1632-1704), वॉल्टेयर (16 94-1778), और रूसो (1712-1778) थे। फ्रांसीसी समाज में विद्यमान सामाजिक परिस्थितियों के साथ-साथ इन विचारों द्वारा निर्मित उत्तेजना ने फ्रांसीसी क्रांति का नेतृत्व किया जिसने निरंकुष राजतन्त्र का अंत किया। इसने यूरोपीय समाज की राजनीतिक संरचना को बदल दिया और उदार लोकतंत्र के आगमन की घोषणा करके सामंतीवाद के युग को प्रतिस्थापित किया। 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के द्वारा राजनीतिक क्रांतियों की लम्बी श्रृंखलाओं का सूत्रपात हुआ और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक चला जो समाज विज्ञान संबंधी सिद्धांतों के निर्माण के उदय में सबसे तात्कालिक कारक था। इन क्रांतियों का कुछ समाजों पर बहुत गहरा असर पड़ा और कई सकारात्मक परिवर्तनों का नेतृत्व किया। हालांकि, कई प्रारंभिक सिद्धान्तकारों का ध्यान जिन बातों ने अपनी और आकर्षित किया वे सकारात्मक परिणाम नहीं थे अपितु इस तरह के कट्टरपंथी परिवर्तनों के नकारात्मक प्रभाव थे। ये लेखक इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप अराजकता और अव्यवस्था से मुख्य रूप से विक्षुब्ध थे, विशेषकर फ्रांस में और समाज में व्यवस्था फिर से बहाल करना चाहते थे। इस अवधि के कुछ चोटी के विचारक वास्तव में मध्य युग के शांतिपूर्ण और अपेक्षाकृत व्यवस्थित दिनों की वापसी चाहते थे। अधिक तर्कसंगत विचारकों ने स्वीकार किया कि सामाजिक परिवर्तन ने इस तरह की वापसी असंभव कर दी है। अतः उन्होंने समाज में व्यवस्था के नए आधार खोजने का प्रयास किया जिन्हें अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी की राजनैतिक क्रांति द्वारा पलट दिया गया। सामाजिक व्यवस्था के मुद्दों में इस प्रकार की रूचि शास्त्रीय समाजशास्त्रीय सिद्धांतकारों, विशेष रूप से कॉम्ट, दुर्खाइम और पार्सन्स की प्रमुख चिंताओं में से एक थी।

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 19वीं शताब्दी की शुरुआत में एक अन्य विकास हुआ, जिसने समाजशास्त्र के उद्‌भव को महत्वपूर्ण आकार दिया वह औद्योगीकरण क्रांति थी। प्रारंभिक समाजशास्त्री औद्योगीकरण के प्रारंभ होने के साथ ही समाज में घटित हो रहे परिवर्तनों से बहुत विक्षुब्ध थे, जिसने अपने ग्रामीण से शहरी विशाल प्रवास के साथ ही जीवन की शैली को बदल दिया और शोषक वर्ग संरचना को कठोर बनाया- ऐसे सभी विषयों ने जिसने कार्ल मार्क्स की पूंजीवाद की आलोचना जैसे कई सामाजिक सिद्धांतों के विकास पर मौलिक प्रश्न उठाए।

1.3.2 औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति एक मात्र घटना नहीं थी, अपितु अंतर-संबंधित विकास के एक समूह से संबंध रखती थी जिसने पश्चिमी देशों को एक विशाल कृषक प्रणाली से एक दमनकारी औद्योगिक प्रणाली में परिवर्तित होने का मार्ग प्रशस्त्र किया। यह इंग्लैंड में लगभग 1760 ईस्वी के आसपास प्रारंभ हुआ और इसने लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में बड़े परिवर्तन किये, प्रारंभ में इंग्लैंड में और यूरोप के अन्य देशों में फैला। यूरोप में विशेष रूप से इंग्लैंड में नए क्षेत्रों, अन्वेक्षणों, वाणिज्य और व्यापार की खोज और शहरों का निरंतर विकास, माल की मांग में वृद्धि लाया। इस प्रणाली के भीतर, कुछ लोगों ने काफी लाभ कमाया, जबकि अधिकांश लोग लंबे समय तक काम करते थे और वो भी कम पैसे के लिए काम करते थे।

औद्योगिक क्रांति के दौरान, नए उपकरण और तकनीकों का आविष्कार किया गया था, जो बड़े पैमाने पर माल का उत्पादन कर सकते थे। जेम्स हर्ग्रीव्स द्वारा 1767 में स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया गया, जिससे उत्पादन गतिविधि में तेजी आई। 1769 में आर्कराईट ने आर्कराईट्स वाटर फेम नामक एक और उपकरण का आविष्कार किया जो इतना बड़ा था कि इसे किसी व्यक्ति के घर में नहीं रखा जा सकता था और इसे लगाने के लिए एक विशेष इमारत की आवश्यकता थी। अक्सर यह कहा जाता है की कारखाना प्रणाली की शुरुआत इसी कारण से हुई। इसने अर्थव्यवस्था में उत्पादन की सामंतवादी प्रणाली को पूंजीवादी प्रणाली में परिवर्तित किया। इसके उपरांत, पूंजीपतियों की एक नई श्रेणी उभरी जिसने उत्पादन की इस नई प्रणाली को नियंत्रित किया। इस क्रांति के कारण समाज हाथ द्वारा निर्मित वस्तुओं के पुराने युग से निकल कर मशीन द्वारा निर्मित वस्तुओं के नए युग में स्थानांतरित हो गया। इस बदलाव ने औद्योगिक क्रांति के उद्‌भव का उद्‌घोष किया।

अर्थव्यवस्था में बदलाव के साथ, समाज में कई बदलावों के अनुसरण हुए। जैसे जैसे पूंजीवाद अधिक जटिल होता गया बैंकों, बीमा कंपनियों और वित्त निगमों का विकास हुआ। इस कारण औद्योगिक श्रमिकों, प्रबंधकों और पूंजीपतियों की एक नई श्रेणी उभरी। नए औद्योगिक समाज में कृषकों ने अपने जैसे ही अन्य हज़ारों लोगों के साथ स्वयं को कपड़ा मिल में कपास धुनते पाया। खुले और रौशनी से भरपूर ग्रामीण क्षेत्रों की बजाय, अब वे धूल और गंदगी में रह रहे थे। उत्पादन में वृद्धि के साथ ही शहरी जनसँख्या भी बढ़ने लगी। आबादी बढ़ने के साथ साथ बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में प्रवास ने शहरीकरण को बढ़ावा दिया। औद्योगिक शहर तेजी से बढ़े। इन औद्योगिक शहरों को विशाल सामाजिक-आर्थिक असमानताओं द्वारा अंकित किया गया था।

ये परिवर्तन रूढ़िवादी और कट्टरपंथी दोनों ही विचारकों से संबंधित हैं। रुढ़िवादी इस बात से डरते थे की ऐसी परिस्थितियां अराजकता और अव्यवस्था को बढ़ावा दे सकतीं हैं, जबकि फ्रेडरिक एंगल्स जैसे कट्टरपंथियों को लगा कि श्रमिक वर्ग की क्रांति कारखानें के श्रमिकों द्वारा प्रारंभ की जा सकती है जो सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देगा। हालांकि, चिंताएं एक दूसरे से बहुत भिन्न थी, फिर भी उस समय के सामाजिक विचारक औद्योगिक क्रांति के संभावित कारणों के प्रभाव में एकजुट थे। वे नए श्रमिक वर्ग के महत्व पर भी सहमत थे। अतः औद्योगिक क्रांति के महत्वपूर्ण विषयों जिसने प्रारंभिक समाजशास्त्रियों को चिंतित किया वह श्रमिकों की स्थिति, संपत्ति का हस्तांतरण, शहरीकरण और प्रौद्योगिकी था।

1.4 समाजशास्त्र के सिद्धांत का उदय

जैसा कि हमने प्रारंभ में देखा, जिस समय समाजशास्त्र एक विषय के रूप में आकार ले रहा था, बौद्धिक उत्तेजना ज्ञानोदय के रूप में यूरोप में देखी गई। यह उल्लेखनीय बौद्धिक विकास और दार्शनिक विचारों के बदलाव का काल था। समाज में हो रहे परिवर्तनों के बारे में ज्ञानोदय के विचारकों तक जो आम राय पहुँची जिसने समाजशास्त्र के उद्‌भव में मुख्य बौद्धिक प्रणेता की भूमिका निभाई वे थे, पहला, इतिहास का दर्शन जो की इस तथ्य को मानता है की समाज चरणों (ढांचे) में प्रगति करता है और इन योजनाओं की उपस्थिति के कारण समाज को समझने के नियम भी प्रकृतिक विज्ञान की तर्ज पर वैज्ञानिक और व्यवस्थित तरीके से तैयार किए जा सकते हैं। दूसरा, सामाजिक सर्वेक्षण की मात्रात्मक पद्धति के रूप में सामाजिक सर्वेक्षण एक उपकरण के रूप में माना गया जिसे समाज में विद्यमान सामाजिक समस्याओं को समझने में उपयोग किया जा सकता है और इस प्रकार सामाजिक सुधार के लिए समाधान खोजें।

हालांकि, सामाजिक सिद्धांत पर ज्ञान का प्रभाव इतना प्रत्यक्ष और सकारात्मक नहीं था, क्योंकि यह अप्रत्यक्ष और नकारात्मक था। वास्तव में, ज्ञानोदय के प्रति लुईस डी बोनाल्ड (1754-1840) और जोज़फ डी मेस्ट्रे (1753-1821) जैसे रुढ़िवादी प्रतिक्रियावादियों ने समाजशास्त्र के विकास के लिए उतना योगदान दिया जितना उन विद्वानों ने जो ज्ञानोदय से प्रभावित थे। डी बोनाल्ड व्यापक और क्रांतिकारी परिवर्तनों से बहुत व्याकुल थे इन्हीं परिवर्तनों के कारण एक अत्यधिक अव्यक्तिक शहरीय नगर जीवन की स्थापना हुई, जो पूरी तरह से किसी भी प्रकार के सामुदायिक बंधन से विहीन थी और उन्होंने बीते समय की शांति और स्थिरता की वकालत की। इस तरह, समाजशास्त्र व्यक्ति की बजाय एक विश्लेषण की इकाई के रूप में समाज पर ज़ोर देता है; अंतर-संबंधित और अंतर-निर्भर के रूप में समाज के विभिन्न भागों की मान्यता है; और; समाज में परम सामंजस्य और स्थिरता पर ज़ोर देता है- अतः कहा जा सकता है कि यह रुढ़िवादी प्रतिक्रियाओं द्वारा प्रभावित हो सकता है।

वास्तव में, यह कहना उचित होगा कि 'जब समाजशास्त्र के लक्ष्य रुढ़िवादी विचारों (सामंजस्य, स्थिरता और एकता) से प्रभावित हो रहे थे, तो पद्धतियां ज्ञानोदय के विचारकों से प्रभावित हो रही थीं जिन्होंने ये महसूस किया ही कोई अतीत में वापस नहीं जा सकता, परन्तु समाज की एक नई सोच (वैज्ञानिक पद्धति) का प्रयोग कर एक बेहतर समाज का निर्माण किया जा सकता है। अतः ज्ञानोदय और रुढ़िवादी विचार समाजशास्त्र के विज्ञान का निर्माण करने के लिए संयुक्त हुए। इसके अलावा, ये बौद्धिक हलचलें 18वीं-19वीं शताब्दी के पश्चिमी यूरोप में प्रचलित सामाजिक परिवेश से अलग नहीं थी।

1.5 सामाजिक मानवविज्ञान का उद्‌भव

जहाँ तक मानवविज्ञान और उसके शैक्षणिक उपयोगिता का संबंध है यह प्राकृतिक विज्ञान और मानविकी के एक मिलान बिंदु के रूप में शुरू हुई है। सामाजिक मानवविज्ञान, मानव विज्ञान का एक हिस्सा है, इसकी उत्पत्ति ऐतिहासिक रूप से मानव विज्ञान के अन्य घटकों के विकास से जुड़ा हुआ है। सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव समाजशास्त्र, दर्शन, जातीय-इतिहास, इतिहास, मनोविज्ञान (सामाजिक मनोविज्ञान), राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों से निकटता से जुड़ा हुआ है। किंतु सामाजिक मानवविज्ञान का सबसे निकटतम विषय समाजशास्त्र है। मानवविज्ञान के अत्यधिक विस्तृत विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए, इस अनुशासन के बौद्धिक विकास और उद्‌भव का व्यापक रूप से पता लगाना मुश्किल है।

समाजशास्त्र की तरह, मानवविज्ञान के उद्भव और विकास को पश्चिमी दुनिया में सीधे वैज्ञानिक विकास से जोड़ा जाता है। यदि कोई सदियों पहले 'मानव विज्ञान' शब्द के अस्तित्व को मानता है, तो "मानवविज्ञान एक बहुत पुराना विषय है। मानव विज्ञान एक शब्द है जो प्राचीन यूनानियों ने भी उपयोग किया था। उनके लिए *एन्थ्रोपोलॉजिया* 1595 में उत्पन्न हुआ था। इमानुएल कांत ने 1798 में *एन्थ्रोपोलॉजिया इन प्रैग्मैटिस्चर हिंसिकट* नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की थी (सराना 1983:3)। 15वीं और 16वीं शताब्दी में पुर्तगाली और स्पेनियों ने अफ्रीका के हिस्सों और नई दुनिया के अपने विजय के इतिहास के बारे में लिखा था। ये सब मानवविज्ञान की महत्वपूर्ण स्रोत सामग्री हैं। इनके अलावा, यात्रियों और अन्य लोगों के लेखन, और रूसो का महान असभ्यता के बारे में अटकलें, बौद्धिक विचारधारा में परिवर्तन का संकेत देती हैं।(वही)

मानवविज्ञान के बुनियाद को ग्रीको-रोमन पुनर्जागरण काल में भी रेखांकित किया गया है, यह विशेष रूप से हेलिकर्नासस (484-425 बीसी) के हेरोडोटस के लेखन से शुरू हुआ। वोगेट के अनुसार (1975:7), हेरोडोटस को नृवंशविज्ञान के "पिता" के रूप में नहीं तो संभावित रूप से अग्रदूत के रूप में उद्धृत किया गया है। वास्तव में, हेरोडोटस को मुख्य रूप से फारसी युद्धों के इतिहास और पश्चिमी एशिया और मिस्र के विभिन्न हिस्सों, काले सागर के उत्तरी तट पर के सिथियन, इथियोपियाई और सिंधु घाटी की विस्तृत यात्रा कथाओं के लेखन के लिए याद किया जाता है (सीएफ. एरिक्सन 2001:2)। उस समय के ग्रीक दार्शनिक, विशेष रूप से सुकरात, प्लेटो और अरस्तु ने भी मनुष्य और समाज के अध्ययन पर प्रभाव डाला। बाद में, रोमन दार्शनिक मार्कस तुलियस सीसेरो ने भी मानव समाज को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई शताब्दियों के अंतराल के बाद खासकर 16वीं शताब्दी एडी में कुछ दार्शनिकों ने समाज और राज्य के अध्ययन में रुचि लिया। इन कुछ विद्वानों में थॉमस हॉब्स और मैकियावेली भी शामिल है। इससे पहले, 14वीं शताब्दी एडी में नैतिक-ऐतिहासिक दर्शन और सामाजिक प्रतिमान के संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण पर इब्न खलदुन के महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख किया जा सकता है।

1.5.1 विकास का पहला चरण

18वीं शताब्दी तक यूरोप में पुनर्जागरण के अनुभव और प्रभाव के बाद रूसो, विको, बैरन डी मॉन्टेक्विउ और जॉन लॉक जैसे कई प्रतिष्ठित दार्शनिक हुए जिन्होंने समाज को समझने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया और उस समय की सामाजिक घटनाओं को श्रेणीबद्ध किया। पूर्व के इन कार्यों ने निश्चित रूप से सामाजिक विज्ञान के विकास और समाजशास्त्र और मानव विज्ञान सहित मानव समाज के विज्ञान के लिए दार्शनिक आधार रखा। पहले के दार्शनिकों और विद्वानों के योगदान ने निश्चित रूप से मानव विज्ञान के उद्भव और विकास में योगदान दिया है, हालांकि उन्हें वास्तव में मानव विज्ञान कहा नहीं जा सकता है। मानव विज्ञान और सामाजिक विज्ञान का विकास जो पहले के दार्शनिक और ऐतिहासिक अध्ययनों को प्रारंभ किया था, यह दो चरणों में आया था। पहले चरण (1725- 1840) में "दार्शनिक वैज्ञानिक इतिहास से मनुष्य, समाज और सभ्यता के अध्ययन को सफलतापूर्वक अलग किया और उसके द्वारा एक सामान्य सामाजिक विज्ञान तैयार किया" (वोगेट, 1975:41)। हालांकि, होबेल (1958) का मानना है कि "मानव विज्ञान मुख्य रूप से प्राकृतिक विज्ञान से उपजी है और प्राकृतिक विज्ञान परंपरा के एक बड़े परिमाण का वहन करती है" (पृ. 9) और ना कि इतिहास या दर्शन के। इसके पहले के संगठन और मानव विज्ञान की प्रकृति की समस्या ऐसी थी कि 20वीं शताब्दी के मध्य में भी ई.ई. इवांस-प्रिचर्ड को ब्रिटिश मानव विज्ञान (विशेष रूप से सामाजिक मानव विज्ञान) में समस्या का सामना करना पड़ा। सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति के बारे में उनका कहना था कि "सामाजिक मानव

विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान के रूप में देखने वाले और जो खुद (इवांस-प्रिचर्ड) इसे मानविकी में से मानते हैं उन लोगों के बीच विचारों का व्यापक अंतर है। आज जब मानव विज्ञान और इतिहास के बीच संबंधों पर चर्चा की जा रही है तब यह विभाजन शायद सबसे तेज है" (इवांस-प्रिचर्ड, 1951:7)।

1.5.2 विकास का दूसरा चरण

दूसरे चरण (1840-1890) में "प्राकृतिक विज्ञान में एक स्थिर संतुलन मॉडल से एक गतिशील मॉडल में परिवर्तन था। इसकी पराकाष्ठा उष्मागतिकी और डार्विनियन विकासवादी सिद्धांत के परिचय के साथ आई "(वोगेट, 1975: 42)। मानव विज्ञान जैसे विविधता वाले क्षेत्र को 1860 के दशक में एक सामान्य मानव विज्ञान विषय में एकीकृत करने के लिए एक प्रयास किया गया था जो मनुष्य के प्रारंभिक इतिहास में संलग्न होगा। 1870 तक, भौतिक मानव विज्ञान, प्रागैतिहासिक और नृवंशविज्ञान को एकीकृत करके "मानव विज्ञान का एक विशिष्ट चरित्र स्वयं प्रकट होना शुरू हुआ" (सीएफ। वही।)। इस अवधि में मानव विज्ञान के उद्भव को शैक्षणिक विषय में शामिल किया गया है। यह भौतिक और जैविक क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति की जीत की प्रेरणा के माध्यम से, उन्नीसवीं शताब्दी के मानवविज्ञानी मानते थे कि सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाएं खोजने योग्य शास्त्र युक्त सिद्धांत थे। यह दृढ़ विश्वास अतीत की अवधि की आकांक्षा के साथ अपने हितों में शामिल हो गया, अठारहवीं शताब्दी के ज्ञान और मानव जाति के सार्वभौमिक इतिहास की दृष्टि के लिए सामाजिक विज्ञान का नाम दिया गया था (हैरिस 1979:1)। हालांकि, यह केवल उन्नीसवीं शताब्दी में शैक्षणिक विषय के रूप में उभरा। हालांकि, 18वीं और 19वीं सदी में यूरोप में होने वाले विभिन्न बौद्धिक और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन अनुशासन के उद्भव का महत्वपूर्ण कारक रहा है। कुछ महत्वपूर्ण प्रभावों में यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति शामिल है।

फ्रेड डब्ल्यू वोगेट, सामाजिक विज्ञान के उद्भव को सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान के उद्भव के मार्ग के रूप में देखते है। उसका कहना है:

> "यहां एक संदेह हो सकता है कि अठारहवीं सदी के प्रगतिविदों ने एक नए विषय के लिए नींव रखी- एक सामान्यीकृत सामाजिक विज्ञान। यह तथ्य कि उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान मानव जाति के प्राकृतिक इतिहास की सामान्य रूपरेखा का विस्तार और परिष्करण किया गया था, और इसने संस्कृति के मानव वैज्ञानिक विज्ञान के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य किया, प्रगतिशील सामाजिक दार्शनिक-वैज्ञानिकों और इतिहासकारों द्वारा प्राप्त उल्लेखनीय सफलता को प्रमाणित करता है"(1975:88)।

हालांकि, वोगेट ने अठारहवीं शताब्दी के प्रगतिविदों को मानव विज्ञान (सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान) के अग्रदूतों के रूप में महानता बताने के साथ विरोध जताते हुए कहा है कि प्रगतिविदों ने खुद ही "विशेष तथ्यों के संग्रह" को नजरअंदाज कर दिया, किन्तु "खुद को सामाजिक और सांस्कृतिक सिद्धांतवादी रैंक तक बढ़ा दिया। फलतः इनका विकास के साथ कोई सीधा संबंध नहीं था जो प्रागैतिहासिक, भौतिक मानव विज्ञान, भाषाविज्ञान, और अन्य मानवविज्ञान विशिष्टताओं का नेतृत्व करेगा। फिर भी यह उन विशेषज्ञताओं का अभिसरण था जो सामान्य सामाजिक विज्ञान के आधार पर मानव विज्ञान की भिन्नता को उत्पन्न करता था। ऐतिहासिक और उद्ववविकासवादी प्रक्रियाएं मानव विज्ञान वैज्ञानिक संस्थान के उद्भव में काम कर रही थीं"(वोगेट 1975:89)। मार्विन हैरिस, मानव

विज्ञान के विकास के इतिहासकार थे जिन्होंने भी मानव विज्ञान को "इतिहास के विज्ञान की शुरूआत" के रूप में देखा(1979:1)।

1.6 आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान का उद्भव

आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान का उदय मुख्य रूप से ब्रोंनिस्लो मालिनोव्स्की और ए. आर. रेडक्लिफ़-ब्राउन के योगदान के साथ हुआ है। मार्सेल मास को आम तौर पर फ्रांस में आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान के अग्रणी के रूप में भी जाना जाता है। ब्रोंनिस्लो मालिनोव्स्की सबसे प्रसिद्ध सामाजिक मानव विज्ञानी में से एक है। वास्तव में, उन्हें आम तौर पर आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान में उनका मुख्य योगदान प्रतिभागी विधि या तकनीक के साथ नृवंशविज्ञान विधि का परिचय था और विशेष रूप से पहले के दृष्टिकोण, विकासवादी और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हटकर कार्यात्मकता के सिद्धांत की स्थापना की। पश्चिमी प्रशांत के अर्गोनॉट्स ऑफ दी वेस्टर्न पैसिफिक क्राइम (1944) एंड कस्टम इन सेवेज सोसाइटी, ए साइंटिफिक थ्योरी आफ कल्चर एण्ड अदर *एसेज* उनके महत्वपूर्ण कार्य हैं। ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की के साथ ए.आर. रैडक्लिफ-ब्राउन आधुनिक मानव विज्ञान के संस्थापकों में से एक है। वह अपने सैद्धांतिक दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं, जिन्हें आमतौर पर संरचनात्मक-कार्यात्मकता कहा जाता है। उनका सिद्धांत ऐमाइल दुर्खीम और उनके नृवंशविज्ञान क्षेत्र के डेटा और अनुभव के वैचारिक विचारों के साथ विकसित किया गया था। *दी अंडमान आइस्लैंडरः ए स्टडी इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी (1922)*,और *स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इनप्रिमिटिव सोसाइटी (1952)* उनके महत्वपूर्ण कार्य है। वह विनिमय और सामाजिक संरचना के रूपों के बीच संबंध के तुलनात्मक अध्ययन के लिए जाने जाते हैं। इस तरह उन्हें फ्रांस में आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान के संस्थापक के रूप में भी माना जाता है। उनका सबसे महत्वपूर्ण काम *दी गिफ्ट* (1922) है। विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक मानवविज्ञान में इन अग्रदूतों के साथ, संरचनात्मकता और संरचनात्मक मानव विज्ञान के सिद्धांत को स्थापित करने के लिए लेवी स्ट्रॉस को सूची में शामिल किया जा सकता है। उन्हें मिथक, संस्कृति, धर्म और सामाजिक संगठन के विषयों पर 20 वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक माना जाता है।*दी एलिमेंटरी स्ट्रक्चर ऑफ किन्शिप* (1949), *त्रिस्ट्स ट्रॉपिक्विज* (1955), और स्ट्रक्चरल एन्थ्रोपोलॉजी (1963) उनके महत्वपूर्ण कार्य हैं। ऐसे भी कई मानवविज्ञानी हैं जिन्होंने आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान के विकास में योगदान दिया, किंतु वे या तो बाद में या निचले क्रम में गिने जाते हैं।

एक विषय के रूप में मानव विज्ञान (सामाजिक मानवविज्ञान) का उदय पेशेवर संघों के गठन के रूप में भी माना जा सकता है। 1837 में गठित ऐबरिजनीज़ प्रोटेक्शन सोसायटी एक रूप में स्थापित होने वाला पहला मानव विज्ञान संगठन था (सीएफ सराना 1983:4)। अमेरिकी मानव विज्ञान संघ की स्थापना 1902 में हुई थी (वही: 4)। अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस ने 1851 में मानवविज्ञान को मान्यता दी और 1882 में मानव विज्ञान के लिए एक अलग सेक्शन दिया। 1846 में ब्रिटिश एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस द्वारा मानवविज्ञान को मान्यता मिली और 1884 में एक अलग विभाग दिया गया। लंदन की मानवविज्ञान सोसाइटी 1863 में आया था। 1871 में इस और अन्य एथ्नोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंदन को ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड के मानव विज्ञान संस्थान बनाने के लिए विलय कर दिया गया था। भारत में, 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बंगाल की एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की गई थी (1774)। बॉम्बे की मानवविज्ञान सोसाइटी की स्थापना 1886 में हुई थी(वही: 5)। भारतीय संदर्भ में, इस बात की कोई सहमति नहीं है कि मानवविज्ञान का उदय (सामाजिक मानव विज्ञान सहित) बंगाल की

एशियाटिक सोसाइटी के गठन के साथ मेल खाता है क्योंकि कुछ दावा करेंगे। सराना का मानना है कि 18वीं शताब्दी में भारतीय मानव विज्ञान नहीं उभरा। उन्होंने कहा कि 19वीं शताब्दी के मध्य तक संघों और लेखों की स्थापना "केवल भटकने के प्रयास था। भारत में सामान्यतः मान्यता प्राप्त मानवविज्ञान कार्यों को ब्रिटिश प्रशासकों जैसे ब्लंट, क्रूक, डाल्टन, ग्रिर्सन, इब्बेटसन, मिल्स, नेस्फील्ड, ओ'मलेली, रिस्ले, रसेल, सीनार्ट और थुरस्टन और प्रशासक से बने अकादमिक, जे एच हटन, द्वारा लिखे गए थे। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में। इस शताब्दी में (20वीं शताब्दी), सरत चंद्र रॉय ने छोटानागपुर की जनजातियों पर उनके मोनोग्राफ के साथ मानव विज्ञान सामग्री के इस समूह में शामिल किया "(सराना 1983: 6-7; ब्रैकेट मेरा हैं)। फिर भी, इन संगठनों का गठन विभिन्न देशों में और विभिन्न अवधियों में मानव विज्ञान (सामाजिक मानव विज्ञान सहित) की उभरती स्थिति को इंगित करता है।

1.7 सामाजिक मानव विज्ञान के प्रणेता

लुईस हेनरी मॉर्गन (1818-1881), जॉन फर्ग्यूसन मैकलेनैन (1827-1881), एडॉल्फ बस्टियन (1826-1905), और सर एडवर्ड बर्नेट टायलर (1832-1917) को सामाजिक मानव विज्ञान के अग्रदूतों में शामिल किया जाता है। वहीं फ्रांज बोस (1858-1942), सर जेम्स जॉर्ज फ्रैज़र (1854-1941) और डब्ल्यू एच आर रिवर्स (1864-1922) जैसे मानवविज्ञानी को उनके अनुगामी के रूप में देखा जाता है। कई और ऐसे मानवविज्ञानी हैं जिन्होंने मानव विज्ञान की स्थापना और विकास, खासकर सामाजिक मानव विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

संबंध प्रणाली पर हेनरी लुईस मॉर्गन का अध्ययन सामाजिक मानव विज्ञान के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान है, जिसमें उन्होंने समाज के विकासवादी चरणों को विकसित किया। उनके महत्वपूर्ण कार्यों में *सिस्टम्स ऑफ कान्सैंगविनिटी एंड एफिनिटी ऑफ दी ह्यूमैन फैमिली* (1871) और *एनसिएंट सोसाइटी* (1877) शामिल किया जाता है। इन दोनों कार्यों ने कार्ल मार्क्स को वर्ग के ऐतिहासिक सिद्धांत और ऐतिहासिक भौतिकवाद को विकसित करने के लिए भी बहुत प्रभावित किया। स्कॉटिश नृवंशविज्ञानी जॉन फर्ग्यूसन मैकलेनान और दूसरों ने 'आदिम' विवाह प्रणाली, कानून, टोटेमिस और रिश्ते की समझ में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका मुख्य मानवविज्ञान कार्य *प्रिमिटिव मैरिजः एन इन्क्वारी इनटू दी ऑरिजिन ऑफ दी फॉर्म ऑफ कैप्चर इन मैरिज सेरेमनिज* (1865) है, जिसमें उन्होंने 'एक्सोगोगी' और 'एंडोगामी' जैसे नए पारिभाषिक शब्द को *दी पैट्रिआर्कल थ्योरी* (1885), और स्टडीज इन एनसिएंट हिस्ट्री (1896) में पेश किया। एक चिकित्सक से मानवविज्ञानी बने एडॉल्फ बस्टियन को "जर्मन मानवविज्ञान के पिता" के रूप में जाना जाता है। उनकी जाने-माने पुस्तक "तीन-वॉल्यूम ग्रंथ, *डेर मेन्शेक इन डेर गेशिचटे* (1860 मैनिन हिस्ट्री) के रूप में सामने आया, जिसने मानव मनोविज्ञान और सांस्कृतिक इतिहास पर विचारों को बढ़ावा दिया, और सार्वभौमिक आंदोलन का अध्ययन करने वाले और सांस्कृतिक इतिहास की ठोस घटनाओं को नजर अंदाज करने वाले विकासवादी लोगों के साथ आम विचार साझा किया (एरिक्सन एट अल 2001: 27-28; सीएफ। कोपिंग 1983)। उन्होंने जैविक रूप से भिन्न जाति के विचार का विरोध किया और *मानव जाति की मानसिक एकता के सिद्धांत* को सूत्रबद्ध किया (वहीः 28)।

सर एडवर्ड बर्नेट टायलर जिसे आम तौर पर "संस्थापक" या 'सांस्कृतिक मानवविज्ञान के पिता' के रूप में जाना जाता है वे मुख्यतः सांस्कृतिक विकास और प्रसार, धर्म और जादू की उत्पत्ति के सिद्धांतों से संबद्ध है। 'संस्कृति' और 'सांस्कृतिक अस्तित्व' की उनकी वैचारिक परिभाषा अभी भी आज तक मानी जाती है। वह सामाजिक/सांस्कृतिक मानव

विज्ञान के अग्रदूतों के बीच सबसे प्रतिष्ठित मानवविज्ञानी के रूप में खड़े हैं। *रिसर्च इनटू दी अर्ली हिस्ट्री ऑफ मैनकाइंड एंड दी डेवलपमेंट ऑफ सिविलाइज़ेशन* (1865), *प्रिमिटिव कल्चर* (1871),और *एंथ्रोपोलॉजीः एन इंट्रोडक्शन टू दी स्टडी ऑफ मैन एंड सिविलाइज़ेशन* (1881) उनके कुछ मुख्य कार्य हैं।

फ्रांज बोस जिन्हें "अमेरिकी मानव विज्ञान के पिता" (विशेष रूप से सांस्कृतिक मानव विज्ञान) और "आधुनिक अमेरिकी मानव विज्ञान" के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है। मानव विज्ञान में उनका महत्वपूर्ण योगदान था- उस समय के बहुत लोकप्रिय संस्कृति की समझ के लिए विकासवादी दृष्टिकोण को अस्वीकार करना, "सांस्कृतिक सापेक्षता" की अवधारणा का आधार तत्व तैयार करना और डेटा और विश्लेषण एकत्र करने के लिए अनुभवजन्य तरीकों का प्रयोग करना। *दी माइंड ऑफ प्रिमिटिव मैन* (1911) और *रेस, लैंग्वेज, एंड कल्चर* (1940), उनके महत्वपूर्ण कार्य हैं। जेम्स जॉर्ज फ्रैज़र ने जादू और धर्म की समझ में बहुत योगदान दिया। उनका सबसे महत्वपूर्ण काम *दी गोल्डन बाउः ए स्टडी इन कम्पेरटिव रिलिजन* (1891) था। डब्ल्यूएचआर रिवर्स ने भी उभरते सामाजिक मानव विज्ञान के विकास में योगदान दिया। उनका योगदान मुख्य रूप से संबंध और सामाजिक संगठन के अध्ययन से संबंधित है। उनका सबसे महत्वपूर्ण काम *दी टोडास (1906) और हिस्ट्री ऑफ मेलेनेशिअन सोसाइटी (1914)* था।

1.8 सारांश

ऐतिहासिक विकास जिसमें उन्हें विकसित किया गया था, इसके अनुसंधान के अपने महत्वपूर्ण क्षेत्रों विशेष रूप से कार्य क्षेत्र, प्रभाव क्षेत्र, सिद्धांतों, पद्धतियों और अभ्यास में सम्मिलन और विरोध भी था। यह इस कारण से है कि समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान दोनों मानव समाज का अध्ययन करते हैं और बड़े पैमाने पर अपनी सैद्धांतिक समस्याओं और हितों को साझा करते हैं। यही कारण है कि कई विद्वानों द्वारा सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र का एक भाग या समाजशास्त्र का एक शाखा माना जाता है। मानव विज्ञान और समाजशास्त्र को प्राकृतिक विज्ञान के महत्वपूर्ण तत्वों के साथ स्थापित किया गया था या मानव विज्ञान (एकीकृत मानव विज्ञान) के विषय वस्तु के साथ स्थापित किया गया था, विशेष रूप से भौतिक मानव विज्ञान और पुरातात्विक मानव विज्ञान के घटकों के संदर्भ में भौतिक विज्ञान के साथ इसका संबंध समाजशास्त्र से अधिक है। जहाँ तक उत्पत्ति का सन्दर्भ है सामाजिक मानव विज्ञान की उत्पत्ति समाजशास्त्र से कुछ पहले की ही मानी जाती है। जबकि समाजशास्त्र के उभरने के लिए तत्कालीन यूरोप में विभिन्न कारकों को उत्तरदायी बताया गया है, विशेष रूप से औद्योगिक, सामाजिक-राजनीतिक और बौद्धिक आंदोलनों के लिए जिम्मेदार हैं, यूरोप और अन्य विकसित समाजों के बाहर सामाजिक मानव विज्ञान का उदय मुख्य रूप से 'अन्य' विदेशी समाजों को समझने के लिए बौद्धिक खोज के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। हालांकि, प्रारंभिक वर्षों से समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान के बीच का अंतर कार्य क्षेत्र, अवधारणा और विधि के स्तर के बजाय, प्रयोग के स्तर और अध्ययन की प्राथमिकता निर्धारित करने पर अधिक रहा है।

1.9 बोध प्रश्न

1) समाज-शास्त्र की उत्पत्ति का वर्णन करें।

2) सामाज-शास्त्र की उत्पत्ति में 1789 के फ्रांसीसी आंदोलन का क्या योगदान था?

3) सामाजिक मानव विज्ञान की उत्पत्ति के प्रचलन की आलोचना करें।

4) सामाजिक मानव विज्ञान की उत्पत्ति के चरणों का वर्णन करें।

5) सामाजिक मानव विज्ञान के साथ सामाज-शास्त्र की उत्पत्ति के अंतर की आलोचना करें।

1.10 संदर्भ

बर्जर, पी. (1963). इनविटेशन टू सोशियोलॉजी ए ह्युमैनिस्टिक पर्सपेक्टिव. न्यू यार्कः एंकर बुक्स डबल डे एंड कंपनी, इंक.

बिडनी, डी. (1953). थीअरेटिकल एंथ्रोपोलॉजी. कोलंबियाः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.

बोस, फ्रांज़. (1911). दी माइंड ऑफ प्रिमिटिव मैन. न्यूयार्क. दी मैकमिलन कंपनी

बोस, फ्रांज़. (1940). रेस, लैंग्वेज और कल्चर. न्यूयार्क. दी मैकमिलन कंपनी

बोस, फ्रांज़. (एडेटेड बाई हेलेन कोडेर). (1966). क्वाकियुकी एन्थ्रोपोलॉजी. शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

बोटोमर, टी.बी. (1962). सोशियोलॉजीः ए गाइड टू प्रोबल्म्स एंड लिटरेचर. लन्दनः जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड.

एरिक्सन, थॉमस हाइलाड. (1995). स्माल प्लेसेस, लार्ज इश्यूज़ः ऐन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एंड कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी. सेकंड एडिशन 2001- लन्दनः प्लूटो प्रेस.

एरिक्सन, थॉमस हाइलाड. एंड फिन सिवर्ट निलसेन. (2001). ए हिस्ट्री ऑफ एंथ्रोपोलॉजी (सेकंड एडिशन). न्यूयार्कः प्लूटो प्रेस.

इवांस- प्रिचर्ड, ई.ई. (1951). सोशल एंथ्रोपोलॉजी. लन्दनः कोहेन एंड वेस्ट लिमिटेड.

इवांस- प्रिचर्ड, ई.ई. (1951). सोशल एंथ्रोपोलॉजी एंड अदर एसेज. न्यूयार्कः फ्री प्रेस.

फ्रेज़र, सर जेम्स. (1891). दी गोल्डन बाउः ए स्टडी इन कॉम्प्रेटिव रिलिजन. न्यूयार्कः मैकमिलन एंड कंपनी.

हैरिस, मार्विन. (1979) (1969). दी राइज ऑफ एंथ्रोपोलॉजिकल थ्योरी. लन्दन एंड हेनलीः रूटलेज एंड केगन पॉल.

होएबेल, ई.ए. (1958). मैन, इन दी प्रिमिटिव वर्ल्ड. न्यूयार्क/लन्दन/टोरंटोः मैकग्रा-हिल बुक कंपनी, आईएनसी.

इन्केल्स, ए. (1975). व्हाट इज सोशियोलॉजी? न्यू देहलीः प्रेन्टिस-हॉल.

कोएप्पिंग, क्लाउस-पीटर. (1983). अडोल्फ़ बस्तीयन एंड दी साइकिक यूनिटी ऑफ एन्थ्रोपोलॉजी इन नाइनटीन्थ-सेंचुरी जर्मनी. न्यू यॉर्कः यूनिवर्सिटी ऑफ क्वीन्सलैंड प्रेस.

कूपर, ऐडम जे. (2018). "हिस्ट्री ऑफ एन्थ्रोपोलॉजी." इन एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ("एंथ्रोपोलॉजी"). https:@@www-britannica-com@science@anthropology, lsLM 20 जुलाई 2018).

लेवीस्ट्रॉस, क्लौड. (1949). दी एलीमेंट्री स्ट्रक्चर्स ऑफ किन्शिप. (ट्रांस. 1969). बोस्टनः बीकन प्रेस.

लेवीस्ट्रॉस, क्लौड. (1955). ट्रिस्टस ट्रॉपिकुएस. (ट्रांस. जॉन वेटमैन एंड डोरीन वेटमैन. 1973). न्यूयार्कः एथिनयूम.

लेवीस्ट्रॉस, क्लौड. (1963). स्ट्रक्चरल एन्थ्रोपोलॉजी. यूएसएः बेसिक बुक्स.

मेयर, लूसी. (1965). ऐन इंट्रोडक्शन टू सोशल एन्थ्रोपोलॉजी. ऑक्सफ़ोर्डः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

मैलिनोवस्की, ब्रोनीस्लाव. (1922). एर्गोनॉट्स ऑफ दी वेस्टर्न पैसिफिकः एन अकाउंट ऑफ नेटिव इंटरप्राइज़ एंड एडवेंचर इन दी आर्कीपेलौगिस ऑफ मेलानिसियन न्यू ग्युनिया. लन्दनः रूटलेज एंड केगन पॉल.

मैलिनोवस्की, ब्रोनीस्लाव (1926). क्राइम एंड कस्टम इन सैवेज सोसाइटी. न्यू यार्कः हरकोर्ट, ब्रेस एंड कंपनी

मैलिनोव्स्की, ब्रॉनिस्लाव. (1944). ए साइंटिफिक थ्योरी ऑफ़ कल्चर एंड अदर एस्से. चैपल हिल. उत्तर कैरोलिनाः दा यूनिवर्सिटी ऑफ़ नोर्थ कैरोलिना प्रैस।

मौस, मार्सेल. (1925) (1990). दा गिफ्टः फोर्म्स एंड फंक्शनस ऑफ़ एक्सचेंज इन आर्किक सोसयटीज़. लंडनः रूटलेज।

मैकगी, आर. जे. एंड वार्म्स, आर. एल. (2012). अन्थ्रोपोलोजीकल थ्योरीः एन इंट्रोडक्ट्री हिस्ट्री (5वाँ संस्करण) यू एस एः मैकग्रो हिल।

मैक्लेनन, जॉन फर्ग्यूसन. (1865) (1970). प्रिमिटिव मैरिज. शिकागोः इलिनोइसः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस।

मैक्लेनन, जॉन फर्ग्यूसन. (1876). स्टडीज़ इन एंसियेंट हिस्ट्री. लंडनः बर्न्हार्ड क्वालीच।

मैक्लेनन, जॉन फर्ग्यूसन. (1885) (2006). दा पेट्रियार्क्ल थ्योरी. एडामंट मीडिया कारपोरेशन।

मॉर्गन, लुईस एच. (1871). सिस्टम्स ऑफ़ कोन्संगुईनीटी एंड एफिनिटी ऑफ़ दा ह्यूमन फैमिली. न्यू यॉर्कः स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन।

मॉर्गन, लुईस एच. (1877). एंसियेंट सोसायटी, न्यू यॉर्कः हैनरी हाल्ट एंड को.।

रैडक्लिफ-ब्राउन, ए. आर. (1922). दा एंडोमैन आइलेंडर्सः ए स्टडी इन सोशियल अन्थ्रोपोलोजी. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस।

रैडक्लिफ-ब्राउन, ए. आर. (1952). स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसायटीः एसेज़ एंड एड्रेसिस. ग्लिनकोई, इलिनोइसः दा फ्री प्रैस।

रैडक्लिफ-ब्राउन, ए. आर. (1958). मैथर्ड इन सोशियल अन्थ्रोपोलोजी. शिकागो, इलिनोइसः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस।

रिट्‌जर, जी. (2016). क्लासिकल सोशियोलॉजीकल थ्योरी. न्यू दिल्लीः मैकग्रो हिल एजुकेशन (इंडिया).

रिवर्स, एच. आर. (1906). दा टोडास, न्यू यॉर्क एंड लंडनः मैकमिलन।

रिवर्स, एच. आर. (1914) हिस्ट्री ऑफ़ मेलनेसियन सोसायटी. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस।

सारना, गोपाला. (1983). सोशियोलॉजी एंड अन्थ्रोपोलोजी एंड अदर एसेज़. कलकत्ताः इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशियल रिसर्च एंड एप्लाइड अन्थ्रोपोलोजी।

सजोबर्ग, जी. एंड नेट, आर. (1968). 'बेसिक ओरियनटेशंस टुवर्ड्स दा साइंटिफिक मेथड्स. 'इन ए मेथोड़ोलॉजी फॉर सोशल रीसर्च. न्यू यॉर्कः हार्पर एंड रो।

टाइलर, एडवर्ड बर्नेट. (1865). रिसर्चिज़ इनटू दा अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ मैनकाइंड एंड दा डेवलोपमेंट ऑफ़ सिविलाईज़ेशन. लंडनः जॉन मुरे।

टाइलर, एडवर्ड बर्नेट. (1871). प्रिमिटिव कल्चर लंडनः जॉन मुरे।

टाइलर, एडवर्ड बर्नेट. (1881). अन्थ्रोपोलोजी एन इंट्रोडक्शन टू दा स्टडी ऑफ़ मैन एंड सिविलाईज़ेशन, लंडनः मैकमिलन एंड को।

वोगेट, फ्रेड डब्लू. (1975). ए हिस्ट्री ऑफ़ एथ्नोलोजी. यू एस एः होल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY